<u>प्रैस विज्ञप्ति</u>

लाल किला मैदान में विश्व शान्ति हेतु सामूहिक राजयोग का हुआ

''राजयोग से ही होगी मन में और विश्व में शान्ति''– डॉ0एच0आर0नागेन्द्र

''परमात्मा की सर्व सम्बन्धों से प्यार भरी याद ही योग है''– दादी हृदयमोहिनी

नई दिल्ली, 19 जूनः अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा आज सुबह स्थानीय **लाल किला मैदान में ''विश्व शान्ति हेतु सहज राजयोग''** कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें संस्था के लगभग चालीस हजार सदस्यों ने राज–योग का अभ्यास किया।

इस योग के कार्यक्रम में **ब्रह्माकुमारी संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी** की अध्यक्षता में **मुख्य अतिथि विवेकानन्द योग संस्थान के अध्यक्ष डॉ0 एच0आर0नागेन्द्र, विशिष्ट अतिथि यहूदी समाज के ई0आई0मालेकर, बहाई धर्म के नेशनल ट्रस्टी डॉ0ए0के0मर्चेन्ट, बौद्धी धर्म के लामा लोबजंग, ईसाई धर्म के डॉ0एम0डी0 थॉमस, मुस्लिम धर्म के फिरोज अहमद बख्त** एवं **जैन साध्वी सरिता जी महाराज** ने भाग लिया।

मुख्य अतिथि विवेकानन्द योग संस्थान के अध्यक्ष डॉ0 एच0आर0नागेन्द्र ने जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि मन के चलने की गति पर नियन्त्रण कर उस पर स्वामित्व पाकर शान्त करने को ही ध्यान योग कहा जाता है। उन्होंने कहा कि योग के आठ सूत्रों में अन्त में समाधि है जोकि वास्तव में राज–योग ही है जिसे ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सिखाया जा रहा है जिससे ही व्यक्ति अपने मन को शान्त कर सकता है और विश्व में शान्ति आ सकती है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका दादी हृदयमोहिनी जी ने अपने आर्शीवचन देते हुए बतलाया कि योग सरल शब्दों में परमात्मा की प्यार भरी याद है जिसे भिन्न भिन्न सम्बन्धों से याद किया जा सकता है तथा इस प्यार भरी याद में परमात्म गुण एवं शक्तियों की प्राप्तियां समायी है। इन प्राप्तियों से ही मन शान्त हो जाता और शक्तियों से भरपूर हो जाता है।

यहूदी समाज के ई0आई0मालेकर ने इस अवसर पर कहा कि योग का सम्बन्ध किसी धर्म विशेष से नहीं है यह तो हमारे शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक विकास की विधि है।

बहाई धर्म के नेशनल ट्रस्टी डॉ0ए0के0मर्चेन्ट ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि योग का सम्बन्ध सन्तुलन और अनुशासन से है, जिसे हम अपने जीवन में लाते है तब ही शान्ति स्थापन हो सकती है।

बौद्धी धर्म के लामा लोबजंग ने अपने उदगाार व्यक्त करते हुए कहा कि जीवन में किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने के लिए और आगे बढ़ने के लिए योग आवश्यक है।

ईसाई धर्म के डॉ0एम0डी0 थॉमस ने कहा कि इस तरह के योग के कार्यक्रमों के आयोजनों से ही योग अर्थात खुद का खुदा से सम्बन्ध जुड़ेगा तथा जीवन में अनुशासन और समाज में संतुलन स्थापित होगा।

जैन साध्वी सरिता जी महाराज ने कहा कि आनन्द की प्राप्ति के लिए शान्ति चाहिए और शान्ति की प्राप्ति के लिए सन्तुलन आवश्यक है, जीवन में चिन्ताओं और तनाव से मुक्ति के लिए एकमात्र साधन योग है जिससे मन, चित्त, बुद्धि और शरीर एक हो जाता है।

ब्रह्माकुमारी संस्था के मुख्य प्रवक्ता ने योग को स्पष्ट करते हुए कहा कि योग का सरल अर्थ है दो चीजों का मिलन और गीता जिसे योग का पहला ग्रन्थ माना जाता है उसमें लिखा है आत्मा और परमात्मा से मिलन ही योग है। परन्तु मनुष्य अपने को शरीर समझने के कारण एवं परमात्मा को न जानने के कारण इस योग से वंचित है, जिसे अब ब्रह्मा कुमारी संस्था सिखा रही है। उन्होंने कहा कि योग वैश्विक चीज है जिसका किसी धर्म विशेष से मतलब नहीं है। उन्होंने कहा कि योग ही एकमात्र पद्धति है जिससे विश्व में शान्ति स्थापित हो सकती है।

ब्रह्माकुमारी संस्था की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका एवं कार्यक्रम की निदेशिका ब्र0कु0 आशा ने उपस्थित जनसमूह को शुभ संकल्पों का प्रयोग कराते हुए राजयोग का अभ्यास कराया।